

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड,
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५६ वे ❖ अंक ११ वा ❖ जुलै २०२५ ❖ वीर संवत २५५१ ❖ विक्रम संवत २०८१

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● चातुर्मास सफलता के सूत्र	१५	● आनंदऋषिजी नेत्रालय - अहिल्यानगर ५२
● महावीर के रास्ते से संभव है विश्व में शांती	१६	● बिन जाने कित जाऊँ-प्रश्नोत्तरी प्रवचन ६१
● हिरो से पत्थरों को मत फोडिये	१७	● चित्कार ने सुण ६४
● पुणे व परिसरातील स्थानकवासी		● कुटुंबात किती मुले असावीत ६७
चातुर्मास सूची	२१	● हास्य जागृती ७२
● जैने होने का गर्व जैनत्व से है	२३	● शिक्षा और शिष्यों की चिन्ता ७५
● “अर्हम विज्जा” विविध शिबीर, पुणे	२४	● अरिहंत जागृती मंच, पुणे ७६
● कव्हर तपशील	२६	● जैन स्वाध्याय संघ संमेलन, अहिल्यानगर ७७
● भाग्य को सीखने की कलम है कर्म	३१	● वैराग्य वाणी ७८
● आओ दुर्ध्यान छोडे - ८ : राग ध्यान	३३	● दाव पर सब कुछ लगा दो ७९
● समस्या का समाधान	३८	● ज्ञान पोस्ट सेवा सुरु ८१
● भगवान महावीर के जीवन सूत्र	४१	● बिखरे मोती ८२
● आठ कर्म	४५	● सादडी राणकपूर जैन संघ, पुणे ८७
● जागृत विचार	४८	● जैन सोशल ग्रुप, पिंपरी-चिंचवड ८७
● भारती रक्षा विज्ञान के शिल्पी,		● श्री. राजकुमारजी भंडारी, पुणे - पुरस्कार ८८
पद्मविभूषण डॉ. दौलतसिंह कोठारी	४९	● स्टेशनरी कटलरी असो., पुणे ८९
		● आर.एम.डी. फाऊंडेशन, पुणे ९१

● IAS श्री. आनंदजी भंडारी – सन्मान	९२	● श्री. प्रकाशभाई शहा, पुणे	९९
● दृष्टी नेत्रलाय, पुणे – उद्घाटन	९२	● समग्र जैन चातुर्मास सूची	१००
● श्री. सुभाषजी रुणवाल – पुरस्कार	९३	● स्वानंद महिला संस्था, पुणे	१००
● डॉ. अभयजी फिरोदिया – पुरस्कार	९३	● सुरक्षा : हेडलाईट को रिपेयर किया	
● जैन कॉन्फरन्स पंचम झोन, पुणे	९७	जा सकता है, सिर को नहीं	१०१
● संचेती ट्रस्ट, पुणे	९७	● मासिकासाठी मॅगझिन पोस्ट सेवा सुरु	१०२
● सूर्य योग ध्यानथॉन, पुणे	९९	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति – “मॅगझिन पोस्ट” सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र साठी)
 * वार्षिक वर्गणी – रु. ८०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २३००

जैन जागृति – “मॅगझिन पोस्ट” सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र बाहेर)
 * वार्षिक वर्गणी – रु. ९०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २६००

मॅगझिन पोस्ट या सुविधेमुळे प्रत्येक ग्राहकांना १००% अंक ३ ते ४ दिवसात मिळणार.

या अंकाची किंमत ५० रु. ● Google Pay - M. 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/Google Pay - M. 9822086997/
 AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
 Bank : STATE BANK OF INDIA ● Branch : Market Yard, Pune 37.
 Current A/c No. : 10521020146 ● IFS Code : SBIN0006117



'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

चातुर्मास सफलता के सूत्र

प्रवर्तक : श्री गणेश मुनि 'शास्त्री' जी म.

चातुर्मास का मंगल प्रारम्भ हो गया। आषाढी पूनम से कार्तिक पूनम तक पाद विहारी जैन श्रमण एक ही क्षेत्र में रहते हैं। यह जैन साधु साध्वियों की उनकी अपनी परम्परा है, उनका अपना कल्प है। साधु-साध्वी चार माह के लिए निर्धारित स्थान से कहीं भी विहार नहीं करते।

चातुर्मास प्रवास का कारण : कई बार कई लोगों के द्वारा यह प्रश्न प्रायः किया जाता है कि चार माह तक एक ही क्षेत्र में साधु की अवस्थिति का क्या औचित्य है। संत और सरिता को तो सतत गतिशील रहना चाहिए। इनकी गति से व्यापक लाभ की संभावना रहती है। यह ठीक है कि साधु के सान्निध्य में लोक मंगल पुष्ट होता है और साधु यदि सतत विचरणशील रहता है तो प्रचुर रूप से लोकोपचार सम्पन्न होते हैं पर साधु का जीवन एकान्त रूप से लोकहित के लिए नहीं है। लोकहित से पहले आत्महित भी तो है। जो आत्महित को सम्यक प्रकार से सम्पादित कर लेता है, वही परहित कर सकता है।

साधु जब दीक्षित होता है। उस समय पाँच महाव्रतों को स्वीकार करता है अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पाँच महाव्रतों में प्रथम महाव्रत अहिंसा का है। मनसा, वाचा, कर्मणा जीवन पर्यन्त के लिए समग्र रूप से साधु अहिंसा का परिपालन करने के लिए संकल्पबद्ध होता है। अहिंसा है तो अन्य महाव्रत भी है। अहिंसा के अभाव में अन्य महाव्रतों का पालन कठिन है। अहिंसा मूल है। साधु को षटः काया के प्रतिपालक के रूप में जाना जाता है। चातुर्मास काल एक ऐसा काल है, जिसमें वर्षा के कारण चारों ओर हरियाली छा जाती है एवं छोटे-बड़े त्रस एवं स्थावर जीवों की प्रचुर रूप से इतनी उत्पत्ति हो जाती है कि संत

के द्वारा गमणागमण की प्रक्रिया में बहुत अधिक सावधानी रखने के बावजूद भी जीवों की हिंसा की संभावना रहती है। ऐसी स्थिति में साधु एक स्थान विशेष में ठहर कर आत्म-साधना करता है एवं जिस क्षेत्र में चार माह के लिए ठहरता है, वहाँ का जन-मानस उसके सान्निध्य का सहज ही विशेष रूप से लाभ अर्जित कर लेता है एवं करना भी चाहिए।

चातुर्मास का लाभ उठाएँ : साधु-साध्वियों के लिए तो चातुर्मास का महत्व है ही, श्रावकों के लिए भी चातुर्मास का कम महत्व नहीं है। श्रावकों को चाहिए कि वे चार माह का उपयोग अधिकाधिक जागरूकता के साथ करें। यूँ तो प्रत्येक व्यक्ति को क्षण-क्षण जागरूक रहना चाहिए क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है एवं समय का चक्र तेजी से घूम रहा है। कब किसके जीवन का दीप बुझ जाए, कब सांसों का खजाना छूट जाएँ। जो धर्म-साधना हम कर लेते हैं, वही तो जीवन में सहायक सिद्ध होती है।

चार माह तक संत-संती जी के सान्निध्य में पूर्ण निष्ठा के साथ लाभ उठाना चाहिए, चार माह का समय काफी लम्बा समय होता है। तत्त्वज्ञान प्राप्त करके जीवन में क्रियाओं के पक्ष को काफी मजबूत बनाया जा सकता है। संतों के सान्निध्य में धार्मिक ज्ञान-शिबीर एवं सेवा आदि की दृष्टि से ऐसे कार्यक्रम भी चातुर्मास अवधि में समायोजित किये जा सकते हैं। जिनका संघ समाज के लिए स्थायी लाभ सिद्ध हो सके। जिन क्षेत्रों में संतों के चातुर्मास नहीं हैं। उन्हें भी चाहिए कि वे प्रतिदिन एक घण्टे का समय निकालकर अपने धर्म स्थान में जाकर सामायिक, स्वाध्याय आदि की प्रवृत्ति से स्वयं को जोड़े। पर्व के दिनों में तो थोड़ा-सा भी प्रमाद न करें।

चातुर्मास का महत्व : लौकिक दृष्टि से चार महीनों का जितना महत्व है, आध्यात्मिक दृष्टि से इससे भी अधिक महत्व इन चार महीनों का है। चारों महीनों का योजनाबद्ध ढंग से उपयोग किया जाए। रात्रि भोजन का परिहार, नियमित रूप से सामायिक नवकार मंत्र का जाप, ध्यान योग, ज्ञान शिबिर धार्मिक पुस्तकी का स्वाध्याय, यथाशक्ति तप, अभावग्रस्त जनों की सेवा आदि कई ऐसे महत्वपूर्ण कार्य हैं, जिन्हें करना चाहिए।

चातुर्मास विशेष प्रेरणा लेकर उपस्थित हुआ है। चातुर्मास की पावन प्रेरणाओं को हम हृदयंगम करके यदि जीवन को धर्म, आध्यात्म और परमार्थ की समुचित दिशा दे सकें तो सचमुच गरिमामयी बात होगी। अंत में सफल वर्षावास की अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ, यही कहूँगा।

**चातुर्मास प्रेरणा देता, आओ करलें आत्म-विकास।
धर्म-साधना से जुड़ जाओ, प्रतिपल प्राप्त करो उल्लास !!**

महावीर के रास्ते से संभव है विश्व में शांति !

लेखक : भालचंद्र जैन

जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर ऐसे समय में इस धरती पर अवतरित हुए जब धर्म को लेकर बहुत भ्रम फैल चुका था। लोग स्वर्ग की चाह में जीवों की बलि दे रहे थे, अलग-अलग मतों में उलझे हुए थे और सही-गलत में फर्क करना भूल गए थे। तब भगवान महावीर ने लोगों को सही राह दिखाई।

उन्होंने अहिंसा को जीवन का सबसे बड़ा धर्म बताया। सिर्फ दूसरों को शारीरिक रूप से नुकसान पहुँचाने को ही नहीं, बल्कि मन, वचन और विचार से भी बुरा सोचने को हिंसा माना। उनका मानना था कि अगर हम शांतिपूर्ण जीवन चाहते हैं, तो पूरी तरह से अहिंसा का पालन करना होगा। महावीर का संदेश था कि हर प्राणी को जीने का अधिकार है। जब हम दूसरों की भलाई चाहेंगे, तभी हमारा जीवन सुखी होगा।

उन्होंने सिखाया कि किसी पर विजय पाने की नहीं, बल्कि स्वयं की कमजोरियों पर जीत पाने की जरूरत है। आज अगर दुनिया के शक्तिशाली देश भी महावीर के बताए अहिंसा के रास्ते पर चलें तो तमाम टकरावों को रोका जा सकता है। दुनिया को महावीर के रास्ते पर चलकर ही शांति मिल सकती है। उनका मानना था कि जब तक इंसान अपने से कमजोर को मारता रहेगा, तब तक हिंसा का सिलसिला चलता

रहेगा और इसका अंत विनाश में होगा। उन्होंने सबके साथ मिलकर जाने की राह बताई, जो इस दुनिया को बचाने का रास्ता है।

महात्मा गांधी ने भी भगवान महावीर की अहिंसा को अपनाकर भारत को स्वतंत्रता दिलाई। महावीर के सिद्धांत केवल जैन धर्म तक सीमित नहीं हैं, वे सभी के लिए हैं सभी धर्म, समाज और देशों के लिए। महावीर ने स्त्रियों के उत्थान, सामाजिक समानता और पर्यावरण की सुरक्षा जैसे विषयों पर भी ध्यान दिया। आज जल संरक्षण, स्वच्छता और जनसंख्या नियंत्रण जैसे मुद्दों पर उनके सिद्धांत बेहद उपयोगी हैं।

उन्होंने विज्ञान से जुड़ी बातें भी बहुत पहले समझाई थी, जैसे अणु परमाणु और मूलकण की अवधारणा। इनको आधुनिक विज्ञान ने बहुत बाद में खोजा। महावीर के अनुसार पूजा व्यक्ति की नहीं, उसके अच्छे गुणों की होनी चाहिए। जैन धर्म का णमोकार मंत्र भी उन्हीं महान आत्माओं को नमन करता है, जिन्होंने अपने भीतर के दोषों को जीत लिया है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में महावीर का रास्ता ही सही दिशा दिखा सकता है। पैसा जरूरी है, लेकिन अंतिम लक्ष्य आत्मा की शुद्धि और जन्म-मरण से मुक्ति होना चाहिए। महावीर के सिद्धांत सबके लिए हैं- हर समय, हर परिस्थिति में। उनका बताया रास्ता आज भी उतना ही आवश्यक और उपयोगी है जितना २५०० साल पहले था। उनके सिद्धांतों को अपनाकर हम हर समस्या का समाधान पा सकते हैं और शांति व सुख का जीवन जी सकते हैं।

हीरे से पत्थरों को मत फोड़िये

लेखक : आचार्य श्री ज्ञानचंद्रजी म.

जिस संसार में हम जी रहे हैं, उसमें विविध दृश्य, विविध रूपों में देखने को मिलते हैं, विविध घटनाएँ श्रवण करने को मिलती हैं। हमारी चेतना दृश्य घटनाओं एवं श्रुत घटनाओं के प्रति विविध रूपों में विचार बना रही है। जिन विचारों के कारण आत्मा सही स्वरूप को भूल रही है बाहरी विचार जीवन के साथ निरन्तर चिपकते जा रहे हैं।

आत्मा का सच्चा बोध क्या है? उसे कैसे समझा जाये इस बात का भान ही नहीं। मस्तिष्क में सिर्फ दृश्य घटनाएँ, चित्र व सुनी हुई घटनाएँ भरी हुई है। आत्म-जागरण के विचार हमारे मस्तिष्क में नहीं होते, विचार बाहरी दुनिया में दौड़ रहे हैं। ५ प्रतिशत विचार भी स्वयं के लिए नहीं, आत्मा के लिए नहीं। जबकि शरीर के लिए तो हम निरंतर प्रयास कर ही रहे हैं। शरीर सुरक्षा हमारा सर्वप्रथम सुख है। प्रभु चाहते हैं आत्मा की सुरक्षा के लिए हमारे आचारों में, हमारे विचारों में परिवर्तन आए। उनमें परिवर्तन लाने के लिए संसार के क्षणिक स्वरूप को समझा जाये। जिस संसार में हम जी रहे हैं, जिन वस्तुओं को पाने के लिए हम दिन-रात दौड़ रहे हैं वे वस्तुएँ शान्ति देने वाली नहीं है। शांति प्राप्त करने के लिए हमें कुछ त्यागना होगा। क्यों न पहले ही त्याग साधना के राही बन जाये, क्योंकि संसार का स्वरूप ही ऐसा है कि कोई वस्तु स्थायी टिकने वाली नहीं। हम भी नहीं रहने वाले हैं तब दुनिया की कौन सी वस्तु का भरोसा करे। ऐसी स्थिति में अपनी ऊर्जा को अस्थायी वस्तुओं में खर्च करे तो ऊर्जा तो समाप्त हो जाएगी और प्राप्त भी कुछ नहीं होगा। यह व्यक्ति की समझदारी नहीं। समझदारी यही है कि अपनी ऊर्जा से स्थायी वस्तुओं और शांति को प्राप्त

किया जाये आदिमकालीन पृष्ठ इस प्रकार के उदाहरणों से भरे पड़े हैं, शालिभद्र का वर्णन आता है -

शालिभद्र, अपार ऋद्धि सिद्धि के स्वामी थे, उनके पास संसार की किसी प्रकार की बहुमूल्य से बहुमूल्य वस्तु की कमी नहीं। आज इस भूमण्डल पर शायद ही कोई ऐसा मनुष्य होगा जिसके लिए एवं उसकी पत्नियों के लिए देवलोक से प्रतिदिन वस्त्रों एवं गहनों की पेटियाँ आती हो किन्तु शालिभद्र स्वयं के लिए एवं उसकी ३२ पत्नियों के लिए ३३ पेटियाँ प्रतिदिन देवलोक से उतरती थी, देव भी जिनकी ऋद्धि में सहायता करते हो, उसे क्या कमी रह सकती है? जो गहना और कपड़ा एक बार पहन लिया, उसे दूसरी बार नहीं पहना जाता था। शालिभद्र इतने सुखों में तल्लीन कि उन्हें दुनियादारी का कोई भान नहीं। कहते हैं एक बार सम्राट श्रेणिक शालिभद्र के यहाँ उनकी ऋद्धि समृद्धि को देखने पहुँचे। चौथी मंजिल पर उनके बैठने की व्यवस्था की गई थी। एक से बढ़ कर एक रत्नजड़ित अत्यन्त सुंदर भवन वहाँ जैसी सजावट पूर्व में कहीं नहीं देखी थी। शालिभद्र सातवीं मंजिल पर सुखों में मग्न थे। शालिभद्र की माता अपने पुत्र को बुलाने सातवीं मंजिल पर पहुँची और सूचना दी बेटा! नीचे आओ, हमारे यहाँ नाथ, सम्राट पधारे हैं? शालिभद्र यह नहीं समझते कि कौन सी वस्तु का नाम है सम्राट? बाहर की दुनिया में उन्होंने कभी प्रवेश ही नहीं किया था। उन्हें सूर्य कब उदय होता, कब अस्त होता, इसका भी पता नहीं था अतः वे माँ को जवाब देते हैं- माँ! मैं नीचे नहीं आ सकता, जितना धन चाहिए उतना देकर उस वस्तु को खरीद लो। शालिभद्र की सोच थी कि नाथ (सम्राट) कोई वस्तु होगी अतः माँ को उसे खरीदने के लिए कह दिया।

माँ ने कहा- नहीं बेटा! तुम नीचे आओ। आज हमारे पुण्य का उदय हुआ है कि हमारे घर पर नगर सम्राट हमारे मालिक, हमारे नाथ पधारे हैं। हमें उनकी सेवा में जाना चाहिए लेकिन वे हमारे कृपा कर पधारे हैं। अतः शीघ्र नीचे आओ। माँ का आदेश पाकर शालिभद्र नीचे उतरे और चौथे मंजिल पर पहुँचे तो माँ ने कहा- प्रणाम करो, ये हमारे नाथ है, हमारे मालिक है इनकी कृपा से हम जी रहे हैं। यह सुनकर शालिभद्र सोचने लगे कि ये कौन से नाथ है? मैं तो स्वतंत्रता के साथ जी रहा था, मेरे साथ यह कौन सी परतंत्रता? शालिभद्र चिंतन में डूब गए। श्रेणिक ने शालिभद्र को आशीर्वाद दिया, उसकी ऋद्धि, समृद्धि देखकर आश्चर्यचकित हो गये, लेकिन ये शालिभद्र के हृदय को चोट कर गए। ये विचार करने लगे मैं तो अपने आपको नाथ मानता था, मेरे ऊपर भी नाथ हैं ये मेरी ऋद्धि के मालिक हैं। जिस समृद्धि में मैं जी रहा हूँ वह कभी भी छीनी जा सकती है। यह ऋद्धि, समृद्धि वैभव कुछ भी मेरा नहीं है, कभी भी जा सकता है, राजा उसे बल से भी ले सकता है। वे सोचने लगे- संसार के सभी इन्द्रिय विषय, सुख सामग्री परिवार आदि कुछ भी स्थायी नहीं। सभी अशाश्वस्त हैं, फिर मैं इन सबके पीछे क्यों अपनी अमूल्य शक्ति को खर्च कर रहा हूँ? संसार में सार नहीं है, सब कुछ असार है। मेरी आत्मा ही सार वस्तु है। यही अमूल्य हीरा है बहुमूल्य रत्न है। इससे मैं वैषयिक पत्थरों को फोड़ने जा रहा हूँ। हीरे से पत्थरों को फोड़ने वाला नासमझ मूर्ख ही कहलाएगा। वह व्यक्ति भी नासमझ ही गिना जाता है जो कागज के नोटों से अपना पेट भरना चाहेगा। जैसे कि सौ रुपये के नोट से दस व्यक्तियों का पेट भरा जा सकता है किन्तु एक व्यक्ति सोचे कि मैं अकेले का ही पेट भरकर देखूँ और वह कागज का नोट खाने लग जाय तो वह मूर्ख ही कहलाएगा। व्यक्ति रूपों से वस्तुएँ खरीद कर पेट भर सकता है न कि कागज खाकर।

वैसे ही जिस आत्मा को अनंत सुख, शांति प्राप्त करनी है तो दुनिया की वस्तुओं से प्राप्त नहीं हो सकेगी। दुनिया की वस्तुओं में उलझकर व्यक्ति इस जीवन को और पर जीवन को बिगाड़ लेता है। संसार के विषयों, परिवार एवं वस्तुओं से शांति प्राप्त होने वाली नहीं। शालिभद्र को तो एक झटका लगा, उसे संसार से विरक्ति हो गयी। जिन वस्तुओं का कोई और मालिक हो, ऐसा संसार मुझे नहीं चाहिए। सिर्फ एक दिन पहले जो संसार में इतने रचे-पचे हुए थे अनुरक्त थे उन्हें एक ही झटके में सच्चा बोध प्राप्त हो गया और सब कुछ छोड़कर साधना की तैयारी में लग गये। बत्तीस पत्नियों को कैसे समझाया जाए अतः उन्होंने निर्णय किया कि एक-एक दिन, एक-एक पत्नी को समझाया जाये। पत्नियों से आज्ञा प्राप्त कर वे दीक्षा अंगीकार करने का निश्चय कर चुके थे।

शालिभद्र सब कुछ छोड़कर दीक्षा लेने वाले हैं यह बात पूरे गाँव शहर में फैल गयी। लोग यह तो सोचते रहते हैं कि हमें भी शालिभद्र जैसी ऋद्धि प्राप्त हो लेकिन इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता कि एक नाथ शब्द से उनकी आत्मा कितनी जल्दी जाग्रत हो गई थी और उन्होंने प्राप्त ऋद्धि को भी आराम से छोड़ दिया था व कंटकाकीर्ण संयम के पथ को अपना लिया था। शालिभद्र जी की दीक्षा की खबर उनकी बहिन सुभद्रा (जो धन्ना जी की पत्नी थी) के पास भी पहुँची। भाई के दीक्षा लेने के समाचार सुनकर उनका मोहभाव जाग्रत हो उठा। विचारों में उथल-पुथल मच गई वह सोचने लगी - मेरा भाई भरी जवानी, ३२ स्त्रियाँ व विपुल संपत्ति को छोड़कर दीक्षा ले रहा है, कैसे संयम का पालन करेगा, एक पैर भी कभी जमीन पर नहीं रखा, जिसको यह भी पता नहीं रहता कि सूर्य कब उदय होता है और कब अस्त होता है, ऐसा मेरा भाई संयम के कष्टों को कैसे सहन करेगा?

सेठ धन्नाजी के साथ उनकी पत्नियाँ बैठी हुई

उनके तेल मालिश कर रही थी। सुभद्रा धन्ना जी को सुगंधित पानी से स्नान करवा रही थी। अचानक भाई की याद आ गई- अहो मेरा भाई दीक्षा ले रहा है, आवेग आया और आँखों से आँसू गिरने लगे। आँसू की गर्म बूंदें धन्नाजी की पीठ पर गिरी तो उन्होंने ऊपर देखा। पूछ लिया सुभद्रा ! क्या बात है तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों ? तुम्हें कौन सा दुःख है? सुभद्रा बोली प्राणनाथ! क्या आपको मालूम नहीं है मेरा प्यारा भाई दीक्षा ले रहा है और प्रतिदिन एक-एक नारी को समझा रहा है। इस तरह ३२ दिनों में बत्तीस ही रानियों को समझाकर वह दीक्षा ले लेगा मुझे विचार आ रहा है। संयम जैसे कंटकाकीर्ण मार्ग पर वह कैसे चल पाएगा। संयम साधना के कष्टों को कैसे सहन करेगा यह सोचकर मेरी आँखों में आँसू आ गये हैं।

धन्ना जी बोले- यदि तुम्हारे भाई ने दीक्षा का निर्णय कर लिया है तो इसमें सोचने की बात क्या है? तुम्हारा भाई तो कायर है कायर, दीक्षा लेनी है तो फिर एक-एक नारी को क्या छोड़ना बत्तीस ही नारियों को एक ही झटके में एक ही दिन में छोड़ देना चाहिए। यह शेर जैसी वीरता नहीं है। शेर को वीरता धीरे-धीरे नहीं आती, वह तो सीधा छलाँग लगाता है। शेर को मरना मंजूर है पर उसे कायरता मंजूर नहीं। उसी प्रकार तुम्हारा भाई सच्चा शूरवीर नहीं कायर है।

कायर सुन री तेरा भाई, इक इक पत्नी छोड़े,
सिंहनी जाया शूरवीर तो एक साथ मुँह मोड़े।
हो सजनी एक साथ मुँह मोड़े. जो करना धीरे करना,
यह तो अबला रीत री, यह पुरुषों की रीत नहीं...॥

अपने भाई के प्रति कायर शब्द का प्रयोग सुनकर सुभद्रा तिलमिला उठी। कौन सहन करेगा अपने पीहर पक्ष की निंदा ? उसको आवेश आ गया और बोल पड़ी-पतिदेव ! कहना सरल है किन्तु करना अत्यंत कठिन है। संयम जैसे कंटकाकीर्ण मार्ग पर चले, तब मालूम पड़े।

वचन का तीर छूट गया। तीर छूटने के बाद वापस

नहीं आता। कोई भी बात कहने से पहले सोच विचार कर कही जाए उसी में उसकी विशेषता है। सुभद्रा के एक वाक्य ने धन्ना जी को एक झटके में जगा दिया। धन्ना जी बोले- मुझे इसी समय दीक्षा लेनी है अब मुझे संसार में नहीं रहना। मैं एक साथ तुम सभी पत्नियों का त्याग करता हूँ। यह सुनकर सुभद्रा बोली- नाथ! आप यह क्या कह रहे हो? मैं अपने शब्द वापस लेती हूँ आप मुझे माफ कर दो। अंतरंग की गहराई में जो बात बैठ जाती है वह वापिस नहीं निकल सकती। अब वे संसार में रहने वाले नहीं थे अतः निकल पड़े प्रवज्या पथ पर। सीधे अपने साले शालिभद्र जी के घर पहुँचे, उन्हें प्रतिबोध दिया। कहा- दीक्षा वीरों का पथ है, कायरों का नहीं। तुम एक-एक नारी छोड़ने का कार्य कर रहे हो, वह कायरता है। चलो मेरे साथ हम दोनों एक साथ साधना के पथ पर बढ़ते हैं और दोनों ने एक साथ संयम अंगीकार कर लिया।

कहाँ धन्ना जी का आदर्श जीवन और कहाँ धन्ना शालिभद्र की वह आदर्श जोड़ी, जिन्होंने एक ही झटके में ऋद्धि-समृद्धि से युक्त भरे पूरे परिवार को, संसार को छोड़ दिया और कहाँ हमारी स्थिति है - एक दिन के लिए भी संसार छोड़कर दयाव्रत की आराधना नहीं कर सकते। संसार छोड़ना तो बहुत दूर की बात है, साधना मार्ग के थोड़े से कष्टों को सुनकर पीछे हटते जाते हैं।

हम अपने शरीर की चाहे जितनी चिंता करें इसकी चाहे जितनी संभाल करें किन्तु एक न एक दिन यह मिट्टी में मिलने वाला है। इसको एक न एक दिन छोड़ना ही पड़ेगा। धन्नाजी और शालिभद्र जी ने अपने भव्य महलों को त्याग कर सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लिया और त्याग के पथ पर, साधना के मार्ग पर बढ़ चले जबकि हम संसार के छोटे छोटे विषयों में उलझकर अपनी आत्मा की ऊर्जा को समाप्त कर रहे हैं। हमें भी संसार का त्याग कर संयम मार्ग पर बढ़कर आत्म साधना कर चरम स्थिति को पाना है। ●

कच्छर तपशील - जुलै २०२५



- ❖ **श्री. सुभाषजी रुणवाल, मुंबई – अॅवार्ड**
मुंबई येथील सुप्रसिद्ध बिल्डर, उद्योजक व दानवीर श्री. सुभाषजी रुणवाल (रुणवाल ग्रुप) यांना जेसीएएफ - जैन चार्टर्ड अकाउंटंट फेडरेशन यांच्या तर्फे “लाईफ टाईम अॅचिव्हमेंट” अॅवार्ड प्रदान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ९३)
- ❖ **डॉ. अभयजी फिरोदिया, पुणे – पुरस्कार**
‘फोर्स मोटर्स’चे अध्यक्ष उद्योगपती डॉ. अभयजी फिरोदिया यांना अरुत्वेलवर डॉ. एन. महालिंगम पुरस्कार महाराष्ट्राचे राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन यांच्या हस्ते देण्यात आला. (बातमी पान नं. ९३)
- ❖ **जैन कॉन्फरन्स पंचम झोन**
ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स च्या पंचम झोन प्रांतीय शाखेच्या वतीने महावीर प्रतिष्ठान मध्ये यशस्वी विद्यार्थ्यांचा गुणगौरव समारंभ नुकताच पार पडला. जाणता राजा श्री. विजयकांतजी कोठारी यांना ‘श्रमण संघरत्न’ या उपाधिने सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९७)
- ❖ **श्री सादडी राणकपूर जैन संघ, पुणे**
श्री सादडी राणकपूर जैन संघचा तैतिसावा स्नेह

सम्मेलन पुण्यात संपन्न झाले. माणिकचंद उद्योग समुहाचे चेअरमन, सामाजिक अग्रणी, दानवीर, उद्योगपती श्री. प्रकाशजी धारिवाल यांचा सन्मान करण्यात आला.

(बातमी पान नं. १०१)

- ❖ **श्री. राजेंद्रजी बाठिया – पुरस्कार**
पुणे येथील उद्योजक व विविध धार्मिक, सामाजिक कार्यात अग्रेसर श्री. राजेंद्रजी मोहनलालजी बाठिया यांना स्टेशनरी, कटलरी अॅण्ड जनरल मर्चन्ट असोसिएशन तर्फे व्यापारी भूषण पुरस्कार देण्यात आला. (बातमी पान नं. ८९)
- ❖ **आर.एम.डी. फाऊंडेशन, पुणे**
रसिकलाल माणिकचंद धारिवाल फाऊंडेशन द्वारा शोभाताई आर. धारीवाल यांच्या जन्म दिनानिमित्त विविध कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९१)
- ❖ **श्री. राजकुमारजी भंडारी – पुरस्कार**
पुणे येथील कापड उद्योगातील प्रसिद्ध नाव मूळचंद मिलचे श्री. राजकुमारजी मुळचंदजी भंडारी यांना पुणे जिल्हा रिटेल व्यापारी संघ द्वारा “उत्कृष्ट व्यापारी” पुरस्कार देण्यात आला. (बातमी पान नं. ८८)
- ❖ **संचेती ट्रस्ट, पुणे**
स्व. इंदूमती बन्सीलाल संचेती ट्रस्टच्या वतीने वारकऱ्यांना मेडीकल किटचे वाटप करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९७)
- ❖ **अरिहंत जागृती मंच, पुणे**
अरिहंत जागृती मंच, पुणे द्वारा भ. महावीर जन्म कल्याणक प्रित्यर्थ आयोजित निबंध स्पर्धा पारितोषिक प्रदान समारंभ महावीर प्रतिष्ठान येथे संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ७६)